साहित्य संहिता
Available at http://sahityasamhita.org/
ISSN 2454-2695
Volume 01 Issue 10
November 2015

अभी जो हुआ

मुकेश नेगी

अभी जो हुआ
पहले भी कई बार
हो चूका है
पतझड़ फिर मौसम
का रुख
किसी का नाराज होना
फिर बदलना
ठण्ड गर्मी को
लपेट कर जाती है
अबकी बार भी वैसा
जैसा पहले हुआ
राग रंग ख़ुशी को
जाहिर करते हैं
सेहम वहम प्रफुलित
होने लगते हैं
पगडण्डियों को किनारे
धकेल जाते हैं
पहाड रंग बदलते हैं
मौसम के रुख से
तन्हाई की ओर रुख
पलट जाते हैं
जिन्दगी की गुजर बसर
धीमी हो जाती है ।